# भारतीय प्रबंध गुरुओं की बढ़ती साख

**भारतीय मूल के हजारों प्रबंध गुरु अमेरिका, यूरोप व एशिया के शीर्षस्थ प्रबंध संस्थानों में शिक्षण व शोध के जरिये अकूत बौद्धिक संपदा पैदा कर रहे हैं।**

विश्व राजनीति में हार्ड पावर की तुलना में सॉफ्ट पावर का महत्व बढ़ता जा रहा है। तोप, टैंक, मिसाइल और नाभिकीय हथियारों की बजाय उपन्यास, फिल्म, खान-पान, नृत्य-संगीत, पेंटिंग-स्थापत्य और ब्रांड किसी देश की वैश्विक पहचान बनाने में ज्यादा कारगर साबित हो रहे हैं। सॉफ्ट पावर वैचारिक और सांस्कृतिक शक्ति की पहचान है, जो विभिन्न कला व साहित्य रूपों में अभिव्यक्त होती है। शीतयुद्ध के दौरान रूस और अमेरिकी सेनाओं की मारक शक्ति के आधार पर आकलन किया जाता था कि दोनों महाशक्तियों में से कौन ज्यादा ताकतवर है। फिर यही सिद्ध हुआ कि अमेरिका के प्रभुत्व का मुख्य कारण अस्त्र-शस्त्र, सेनाएं न होकर सांस्कृतिक व रचनात्मक उत्पाद, सेवाएं और कंपनियां हैं, जैसे- हॉलीवुड, डिज्नीलैंड, कोक-पेप्सी, मैकडोनाल्ड, केएफसी, वालमार्ट, आईबीएम, डैल, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और एप्पल आदि। इन सभी की विश्वव्यापी लोकप्रियता अमेरिका के प्रभुत्व को वैचारिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर स्थापित करती है।

अवधेश

अमेरिका व यूरोपीय देशों में सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में उन प्रबंध सस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान है, जो दुनिया की सफलतम कंपनियों के लिए उच्च प्रबंधकों को शिक्षित-प्रशिक्षित करते हैं। इन प्रबंध संस्थानों में हॉर्वर्ड, व्हार्टन, कैलॉग, येल, शिकागो, कोलंबिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रबंध विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय युवा प्रतिभाओं का अमेरिका व यूरोपीय देशों की ओर पलायन 70 और 80 के दशकों में शुरू हो चुका था, किंतु भारतीय प्रबंध गुरुओं को प्रसिद्धि पिछले दशक में मिली है। विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा हासिल करने वाले प्रबंध गुरुओं में पहले तीन नाम हैं- दिवंगत सुमंत्र घोषाल, दिवंगत सीके प्रहलाद व डॉ.रामचरन। अभी हाल ही में दुनिया के 50 सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित प्रबंध गुरुओं की सूची 'थिंकर्स-50' प्रकाशित हुई है। यह सूची दो वर्षों में एक बार प्रकाशित की जाती है और इसके लिए विश्व स्तर पर प्रबंधशास्त्रियों से ऑनलाइन वोटिंग कराई जाती है। इस प्रतियोगिता के लिए 10 मापदंडों का उपयोग किया जाता है, जैसे विचारों की मौलिकता, प्रस्तुति, शैली, लिखित संप्रेषण, अनुयायियों की निष्ठा, व्यावसायिक बुद्धि, अंतरराष्ट्रीय दृष्टि, गहन शोध, विचारों का प्रभाव और गुरु तत्व की उपस्थिति। 'थिंकर्स-50' सूची तैयार करने के पीछे एक गहरी सोच है और इसी कारण विश्व स्तर पर इसकी साख है।

इस सूची में सबसे ज्यादा गुरु अमेरिका के हैं और उसके बाद भारत के। भारतीय मूल के जिन आठ प्रबंध गुरुओं को इस सूची में शामिल किया गया है, वे हैं- विजय गोविंदराजन (टक), नितिन नोहरिया (हारवर्ड), निर्मल्य कुमार (एलबीएस), पंकज घेमावत (आईईएसई), विनीत नायर (एचसीएलटैक), राकेश खुराना (हॉर्वर्ड),

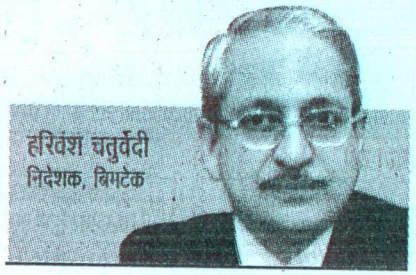

हरिवंश चतुर्वेदी
निदेशक, बिगटेक

शीना आयंगर (कोलंबिया) और सुबीर चौधरी (एएसआई कंसल्टिंग)। इनमें सबसे चर्चित नाम विजय गोविंदराजन (टक) का है, जो सूची में तीसरे स्थान पर हैं। वह न्यू हैंपशायर के डार्टमाउथ कॉलेज के टक बिजनेस स्कूल में इंटरनेशनल बिजनेस के प्रोफेसर हैं। गोविंदराजन को स्ट्रैटजी और इनोवेशन का विश्व स्तरीय विशेषज्ञ माना जाता है। अभी हाल ही में उन्हें एक बड़ी ख्याति उस लेख के लिए मिली, जो उन्होंने जीई के जैफ इमैल्ट और क्रिस टिंबल के साथ मिलकर हॉर्वर्ड बिजनेस रिव्यू में लिखा था। इसमें उन्होंने रिवर्स-इनोवेशन की एक नई प्रबंधकीय अवधारणा स्थापित की, जिसे इस दशक के दस श्रेष्ठतम विचारों में गिना गया है। इसके अनुसार, पहले नए उत्पादों या प्रबंधकीय विचारों का आरंभ विकसित देशों में होता था और फिर उन्हें विकासशील बाजारों में उतारा जाता था। रिवर्स-इनोवेशन की मूलधारणा नए उत्पादों, सेवाओं व विचारों को भारत, चीन, ब्राजील जैसे उभरते हुए बाजारों में तैयार करके उन्हें विकसित बाजारों में उतारने की है। इस प्रबंधकीय अविष्कार के पीछे गहरी अंतर्दृष्टि तथा विकासशील देशों में अभाव व पिछड़ेपन से पैदा होने वाली नवप्रवर्तन की भूख है, जो दुनिया की ज्वलंत समस्याओं के कारगर और किफायती हल तलाशती है। टाटा मोटर्स की नैनो कार, गोदरेज का छोटूकूल रेफ्रिजरेटर, रेवा इलेक्ट्रिक कार, जयपुर फुट, जिंजर होटल श्रृंखला आदि, ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनका आविष्कार भारत में हुआ, लेकिन विश्व स्तर पर उनको मान्यता मिली।

आजकल विजय गोविंदराजन 300 डॉलर के किफायती मकान को डिजाइन करने के विश्व स्तरीय प्रयास का नेतृत्व कर रहे हैं। मात्र 15,000 रुपये में एक कमरे का मकान, जिसमें रसोईघर और शौचालय भी शामिल हो, बनाना असंभव ही लगता है; किंतु रिवर्स इनोवेशन के आविष्कर्ताओं को इसे हासिल कर लेने का पूरा यकीन है। गोविंदराजन का कहना है- महत्वाकांक्षी लक्ष्य सांगठनिक सोच को उच्च स्तर पर ले जाते हैं। अगर हम एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें पहले महान राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखना चाहिए। यदि हमारा लक्ष्य औसत दर्जे का राष्ट्र बनाना है, तो हम वैसा ही हासिल कर पाएंगे। यह वक्त है भय और चिंता के स्थान पर आशा और उम्मीद जगाने का।

'थिंकर्स-50' की सूची में शामिल ये भारतीय तो कुछ बड़े नाम हैं, लेकिन भारतीय मूल के ऐसे हजारों प्रबंध गुरु और प्राध्यापक पिछले 50 वर्षों से अमेरिका, यूरोप और एशिया के शीर्षस्थ प्रबंध संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षण, शोध व अनुसंधान के जरिये अकूत बौद्धिक संपदा पैदा कर रहे हैं। दिवंगत सीके प्रहलाद द्वारा स्थापित यूएस विश्वविद्यालयों में कार्यरत भारतीय प्रोफेसरों की संस्था, एईआईओयू ने एक अंदाज लगाया है कि पिछले 50 वर्षों में भारतीय मूल के 8,100 प्रोफेसर 90 लाख विद्यार्थियों को पढ़ा-लिखा कर 10 ट्रिलियन डॉलर मूल्य की सेवाएं अमेरिकी अर्थव्यवस्था को दे चुके हैं। यह अंदाजा मोटे तौर पर भी सही माना जाए, तो भारतीय प्रबंध शिक्षकों का यह योगदान भारत को पिछले 50 वर्षों में अमेरिका द्वारा दी गई आर्थिक सहायता और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष विनियोग से कई गुना ज्यादा होगा।

यहां पर दो प्रश्न उठते हैं। पहला, अमेरिका में भारतीय मूल के प्रबंधन गुरु इतने लोकप्रिय क्यों है? दूसरा, भारत के अपने शीर्षस्थ प्रबंध संस्थानों में कार्यरत प्रोफेसर विश्व स्तरीय गुरु के रूप में क्यों नहीं स्थापित हो पा रहे?

अमेरिका में भारतीय मूल के प्रबंध गुरुओं की आश्चर्यजनक सफलता के कुछ विशिष्ट कारण हैं। एक तो यही कि प्राचीन काल से ही भारतीयों में अमूर्त, जटिलतम विचारों को ग्रहण करने की अद्भुत क्षमता रही है। पिछले 50 वर्षों में भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में व्याप्त अभावों ने भारतीय मेधा को और अधिक प्रखर और संघर्षशील बनाया है। भारतीय मूल के प्रबंध गुरुओं की सफलता का दूसरा कारण अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में शोध तथा अनुसंधान करने से मिलने वाली गहन विश्व दृष्टि है। डॉक्टरों और वकीलों की तरह प्रबंध गुरुओं को भी अधिकाधिक प्रत्यक्ष औद्योगिक अनुभव हासिल करना जरूरी होता है। तीसरा कारण अमेरिकी विश्वविद्यालयों का खुलापन, स्वायत्तता और प्रबंध का अन्य विषयों से जुड़ा होना है। सवाल यह है कि क्या भारत के शीर्ष प्रबंधन-संस्थान आने वाले दशकों में अमेरिकी अनुभव से कुछ सीखेंगे?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)